प्रातःक्लास पिताश्री ओमशांति मधुबन 27–7–67

रिकार्ड– भोलेनाथ से निराला–ओमशांति। मीठे2 बच्चे सब यह जानते हैं कि भोलानाथ किसको कहा जाता है। तुम संगमयुगी ब्राह्मण ही जानते हो। कलियुगी मनुष्य रिंचक भी नहीं जानते। ज्ञान का सागर एक बाप ही है। वह ही सृष्टि की आदि,मध्य,अंत का ज्ञान समझाते हैं। अपनी पहचान देते हैं। तुम बच्चे अभी समझते हो। आगे कुछ नहीं जानते थे। साधु–संत आदि कुछ नहीं जानते। कहते हैं हम रचता और रचना को नहीं जानते। तो उनको क्या कहेंगे?न जानने वाले नास्तिक। बाप को न जानने कारण और ही ग्लानी करते रहते। बाप कहते हैं मैं ही आय भारत को स्वर्ग बनाता हूँ। बेहद का वर्सा देता हूँ, जो तुम अभी ले रहे हो। जानते हो बेहद के बाप से हम बेहद का सुख का वर्सा ले रहे हैं। यह भी बना बनाया ड्रामा है। एक भी एक्टर न एड हो सकता न कम हो सकता है। सभी को अपना2 पार्ट मिला हुआ है। मोक्ष कब पाय नहीं सकते। जो2 जिस धर्म का है फिर उसी ही धर्म में जाने वाला है। क्रिश्चियन्स आदि वा बौद्धी आदि इच्छा करे हम स्वर्ग में जावें ;परंतु जाय नहीं सकते। जब उनका धर्म स्थापक आता है तब ही उनका पार्ट है। यह तुम बच्चों की बुद्धि में है। सारी दुनियां के मनुष्य मात्र इस समय नास्तिक हैं अर्थात् बेहद के बाप को न जानने वाले। मनुष्य ही जानेंगे ना। यह नाटकशाला मनुष्यों की ही है। हरेक आत्मा निर्वाणाधाम से आती है पार्ट बजाने। फिर पुरुषार्थ करते हैं निर्वाणधाम जाने। कहते है। बुद्ध निर्वाण गया। अब बुद्ध का शरीर तो नहीं गया ना। आत्मा गई ;परंतु बाप समझाते हैं जाता कोई नहीं है। नाटकर से निकल ही नहीं सकते। मोक्ष पाय ही नहीं सकते। बना बनाया ड्रामा है। कोई मनुष्य समझते हैं मोक्ष मिलता है इसके लिए पुरुषार्थ करते रहते। जैसे जैनी लोग पुरुषार्थ करते रहते हैं। उनकी अपनी रसम–रिवाज है। उनका अपना गुरू है। जिनको मानते हैं। बाकी मोक्ष किसको मिलता नहीं। तुम जानते हो हम पार्टधारी हैं इस ड्रामा में। हम कब आये,फिर कैसे जावेंगे यह किसको मालूम नहीं है। जनावर तो नहीं जानेंगे ना। मनुष्य ही कहते हैं हम एक्टर्स पार्टधारी हैं। यह कर्मक्षेत्र है, जहों आत्माएं रहती हैं उनको कर्मक्षेत्र नहीं कहा जाता। वह तो निराकारी दुनियां है। उसमें कोई खेल–पाल नहीं, एक्ट नहीं। निराकारी दुनियां से साकारी दुनियां में आते हैं पार्ट बजाने,जो फिर रिपीट होता रहता है। प्रलय कब होती नहीं। यह कहां से निकाला कि प्रलय होती है?शास्त्रों से। दिखाते हैं महाभारत लड़ाई में यादव और कौरव मर गए। बाकी कुछ रहा नहीं। इससे समझते हैं प्रलय हो गई। यह सब बातें बैठ बनाई हैं। फिर दिखाते हैं समुद्र में पिपर के पत्ते पर एक बच्चा अंगुष्ठा चूसते आया। अब उनसे फिर सृष्टि कैसे पैदा होगी?मनुष्य तो जो कुछ सुनते हैं सत–सत करते रहते हैं। फलाणा हवा से पैदा हुआ ,सत। समझते हैं व्यास भगवान ने शास्त्र बनाई उसमें झूठ थोड़े ही हो सकती। अभी तुम बच्चे जानते हो कि शास्त्रों में क्या है। यह सब है भक्ति दुर्गति मार्ग के शास्त्र। भक्तों को फल देने वाला भगवान बाप ही है। कोई मुक्ति में, कोई जीवनमुक्ति में चले जावेंगे। हरेक पार्टधारी आत्मा का जब पार्ट आवेगा तब फिर आवेंगे। यह ड्रामा का राज सिवाय तुम बच्चों के और कोई नहीं जानते। कहते हैं हम रचता और रचना को नहीं जानते। ड्रामा के एक्टर्स होकर और ड्रामा के आदि,मध्य ,अंत ड्यूरेशन को न जाने तो ईडियट कहेंगे ना। बाप को नहीं जानते तो नास्तिक ठहरे। इस समय के मनुष्यों को जनावर से भी बदतर कहा जाता है। मनुष्य एक्टर होते हुए, समझते हुए हमारी आत्मा पार्ट बजाने आती है,फिर भी अगर ड्रामा के आदि,मध्य,अंत को ना जाने तो जनावर से भी बदतर ठहरे ना। बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि हा जाते। समझाने से भी समझते नहीं। इस समय भारत पत्थर बुद्धि है। जो अपने बेहद का बाप रचता और रचना जिसमें एक्ट करते हैं उनको बिल्कुल जानते नहीं। तुम भी नहीं जानते थे। इतने सभी मनुष्य 84लाख जन्म कैसे लेंगे। 84लाख समझने कारण ड्यूरेशन भी लाखों वर्ष दे दी है। अभी तुम कहते हो बाबा हम आपसे

कल्प2 आकर मिलते हैं। 5000वर्ष पहले भी आपसे मिले थे बेहद का वर्सा लेने। यथा राजा–रानी तथा प्रजा सब विश्व का मालिक बनते हैं। प्रजा भी कहेगी हम विश्व का मालिक हैं। तुम जब विश्व के मालिक बनते हो उस समय चंद्रवंशी राज्य नहीं होता है। तुम बच्चे सारी ड्रामा के आदि ,मध्य,अंत को जानते हो। मनुष्य भक्तिमार्ग में जिसकी पूजा करते हैं उनको भी जानते नहीं। जिसकी भक्ति करनी होती है तो उनकी बायोग्राफी को भी जानना चाहिए ना। एक भी मनुष्य नहीं जो शिव की बायोग्राफी को जानता हो। तुम बच्चे जानते हो बाप के द्वारा। तुम बाप के बने हो। बाप की बायोग्राफी का पता है। वह बाप है पतित–पावन, लिबरेटर,गाइड। तुमको कहते हैं पाण्डव। गाइड कहने से एक गाइड हो जाता। पण्डे कहते हैं तो बहुत गाइड्स हो जाते। तुम सभी के गाइड बनते हो रास्ता बताने लिए। अंधों की लाठी बनते हो। यथा बाप गाइड पण्डा तथा तुम बच्चों को भी बनना है। सबको रास्ता बताना पड़े। तुम आत्मा वह परमात्मा है। उनसे बेहद का वर्सा मिलता है। भारत को बेहद का राज्य था। अब नहीं है। तुम बच्चे अब जानते हो हम बेहद के बाप से बेहद सुख का राज्य लेते हैं अर्थात् मनुष्य से देवता बनते हैं। हम ही देवतायें थे फिर 84जन्म भोग शूद्र बने हैं। शूद्र को शूद्र बुद्धि कमजात कहा जाता है। सब मनुष्य मात्र इस समय शूद्र बुद्धि हैं। बाप ने आकर ब्राह्मण बनाया है। यज्ञ में ब्राह्मण जरूर चाहिए। यह है ज्ञान यज्ञ। भारत में यज्ञ बहुत रचते हैं। इसमें खास आर्यसमाजी बहुत यज्ञ रचते हैं। अब यह तो है रूद्र ज्ञानयज्ञ ,जिसमें सारी पुरानी दुनियां स्वाहा हो जानी है। अब बुद्धि से काम लेना पड़ता है। कलियुग में तो बहुत मनुष्य हैं। इतनी सारी पुरानी दुनियां खलास हो जावेगी। कोई भी चीज काम में न आनी है। सतयुग में तो फिर सब कुछ नया होगा। यहां तो कितना गंद है। मनुष्य कैसे गंदे रहते हैं। धनवान बड़े अच्छे महलों में रहते हैं। गरीब तो बिचारे गंद में झोपड़ियों मे पड़े हैं। अब उनसे झोपड़ियों को डिस्ट्राय करते रहते हैं। उन्हों को दूसरी जगह देकर वह जमीन फिर बिकते रहते हैं। नही तो वह जमीन प्रॉपर्टी उन गरीबों के हैं। उनको पैसा मिलना चाहिए। तो बिचारे साहुकार हो जायें ;परंतु करने न देते। ठगते बहुत हैं। नहीं उठाते तो युक्ति से आग लगाय देते हैं। सबको लूटती रहती है। इनसे गवर्मेंट को धन बहुत मिलता है। मनुष्य दुःखी बहुत हैं। जो सुखी हैं वह भी स्थाई सुख नहीं। अगर सुख होता तो सन्यासी जिनको गुरू बनाते हैं वह क्यों कहें कि यह काग विष्टा समान सुख है। नारी नर्क का द्वार है। तुम्हारे पास चौपड़ी भी है। वह है शंकराचार्य,यह है शिवाचार्य। शिव भगवानुवाच, हम इन माताओं के द्वारा स्वर्ग के द्वार खोल रहे हैं। माताओ पर कलश रखते हैं। फिर वह सबको ज्ञानामृत पिलाती हैं ;परंतु तुम्हारा है प्रवृत्ति मार्ग। दोनों को पवित्र बनाते हैं। तुम हो सच्चे2 ब्राह्मण। वह हैं झूठे ब्राह्मण। वह हथियाला बांध काम चिक्षा पर बिठाते हैं। तुम वह हथियाला तोड़ दोनों को ज्ञान चिक्षा पर बिठाते हो। अभी है अपवित्र असुर,आसुरी सम्प्रदाय। तुम अभी बनते हो दैवी सम्प्रदाय। आसुरी सम्प्रदाय अर्थात् रावण राज्य। गांधी भी कहते थे रामराज्य हो। पर अपन को कोई राक्षस मानते थोड़े ही हैं। बुलाते हैं हे पतित–पावन आओ;परंतु अपन को पतित समझते थोड़े ही हैं। सन्यासी भी गाते हैं पतित–पावन अ बवह तो पतित–पावन हो ना सके। क्या वह पतित–पावन ठहरे?क्या गीता सुनाने वाला कृष्ण पतित–पावन ठहरे?या शिवबाबा?या पानी की गंगा?मनुष्यों को तो कुछ भी समझ में नहीं आता। बाप बच्चों को सुजाग करते हैं। तुम घोर अंधियारे में थे। भक्ति है अंधियारा,ज्ञान है सोझरा। तुम सन्यासियों को भी पकड़ सकते हो। कुम्भ के मेले में कितने मनुष्य जाते हैं। सबके गुरू लोग जाते हैं। वह भी पतित–पावनी गंगा कहते हैं। तब तो ले जाते हैं। गंगा स्नान से समझते हैं पावन बन जावेंगे। ऐसे ही गंगा में हरिद्वार के सारे शहर का कचड़ा जाय पड़ता है। कहां फिर वह कचड़ा सारा खेती में ले जाते हैं। खाद के लिए वह .....बहुत अच्छा होता है खेतियों के लिए। फिर भी मनुष्यों की खाद पड़ती है ना। सतयुग में ऐसे काम होते नहीं। वहां तो अनाज

ढेर का ढेर रहता है। पैसा थोड़े ही खर्च करना पड़ता है। बाबा छोटेपन में अनाज भी बेचता था। अनुभवी है ना। गांव का छोड़ा था। कृष्ण तो वैकुण्ठ का मालिक ,उनको गांव का छोड़ा कैसे कहेंगे?हां, वह ही 84जन्मों बाद फिर गांव का छोड़ा बना है। सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य ,हर चीज की सस्ताई रहती है। तो बाप बच्चे अब तुमको पतित से पावन बनना है। युक्ति बहुत सहज बताते हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। आत्मा में ही खाद पड़ने से तुम मलमी के बन गये हो। वो पारस बुद्धि थे। अभी है पत्थर बुद्धि। तुम बच्चे जानते हो हम अभी पत्थरनाथ से पारसनाथ बनने आये हैं। बेहद का बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। सो भी गोल्डेन एज्ड विश्व। यह है आयरन एज्ड विश्व। बाप बैठ बच्चों को पारसपुरी का मालिक बनाते हैं। तुम जानते हो यहां के इतने महल–माड़ियां आदि कोई काम न आवेंगे। खतम हो जावेंगे। यहां क्या रखा है?अमेरिका पास कितना सोना होगा?जो भी बड़े2 हैं सोने पर डांस करते हैं। यही तो थोड़ा–बहुत सोना जो माताओं पास है वह भी लेते रहते हैं ;क्योंकि उन्हों को कर्ज सोना देना है। तुम्हारे पास वहां सोना ही सोना होता है। यहां कौड़ियां वहां मुहरें होंगी। यहां तो सोने का नाम नहीं है। इनको कहा जाता है आयरन एज। भारत ही गोल्डेन एज्ड था। अभी भारत ही आयरन एज में है। भारत खण्ड की ही बहुत महिमा है। भारत अविनाशी खण्ड है। कब विनाश नहीं होता। भारत है सबसे उंच ते उंच। तुम मातायें सारी विश्व का उद्धार करती हो। तुम्हारे लिए जरूर नई दुनियां चाहिए। पुरानी का विनाश चाहिए। कितनी समझने की बातें हैं। शरीर निर्वाह अर्थ धंधा आदि भी करना है। छोड़ना कुछ नहीं है। बाप कहते हैं सब कुछ करते मुझे याद करते रहो। भक्ति मार्ग में भी तुम मुझ माशूक को याद करते आये हो कि आकर हमको सांवरा से गोरा बनाओ। उनको मुसाफिर कहा जाता है। तुम भी मुसाफिर हो ना। तुम्हारा घर वह है जहां सब आत्माएं रहती हैं। तुम सभी को ज्ञान चिक्षा पर बिठाते हो। सब हिसाब–किताब चुक्तू कर वापस जाने वाले हैं। फिर नई सिरे तुम आवेंगे। जितना याद में रहेंगे उतना पवित्र बनेंगे और उंच पद पावेंग। माताओं को तो फुर्सत रहती है। मेल्स की बुद्धि धंधे आदि तरफ चक्र लगाती रहती है। इसलिए बाबा ने कलष भी माताओं पर रखा है। यहां तो कहते स्त्री को कि पति ही तुम्हारा गुरू ,ईश्वर सब कुछ है। तुम उनकी दासी हो। पिछाड़ी में पूंछ लटकता जावेगा। अभी फिर बाप तुम माताओं को कितना उंच बनाते हो। तुम नारियां ही भारत का उद्धार करती हो। तुम श्रीमत पर स्वर्ग के द्वारा खोलते हो। (पुरुष)अथवा स्त्री दोनों को सुजाग करते हैं। कोई बाबा से पूछते हैं आवागमन से छूट सकते हैं। बाबा कहते हैं हां,कुछ समय। तुम बच्चे तो ऑलराउंड आदि से अंत तक पार्ट बजाते हो। दूसरे जो हैं वह मुक्तिधाम में रहते हैं। उनका पार्ट ही थोड़ा है। वह स्वर्ग में तो जाने वाले नहीं हैं। पार्ट ही बहुत थोड़ा है। आवागमन से मोक्ष इसको कहेंगे, जो पिछाड़ी को आये और रह गये। ज्ञान आदि तो सुन सके। ज्ञान सुनते हैं जो पहले से पिछाड़ी तक पार्ट बजाते हैं। कोई कहे बस हमो यही पसंद है वहां बैठे रहें। ऐसे थोड़े ही हो सकता है। ड्रामा में नूंधा हुआ है। जाके पिछाड़ी में आते हैं। वे बाकी समय शांतिधाम में रहते हैं। यह बेहद का ड्रामा है। अच्छा, बापदादा का यादप्यार गुडमार्निंग।

डायरैक्शन– बापदादा कहे मधुबन सेमिनार में आने लिए .....कोई छुट्टी आदि न लेवे। बापदादा जब डायरैक्शन लिखे तब प्रोग्राम बनाना है। अच्छा विदाई।

प्वाइंट– बच्चे गपोड़े तो मारते रहते हैं। काम जो करना है जिसे विहंग मार्ग की सर्विस हो। वह कहां?बाबा समझाते रहते हैं देहली को पकड़ो। जमीन लो। तुम एक भी पैसा न देना। आपे ही हुण्डी भरते जावेंगे। तुमको मालूम है साधु वासवानी एक मटका रख देता था। मनुष्य आपे ही जाकर उसमें पैसा डालते थे। तुम भी तिजोरी रख देना। देखना मकान के लिए कैसे भर जाते हैं। एकदम भर जावेंगे। बाबा कहते हैं मकान बनना है तो जरूर बनेगा। बुद्धिवानों की बुद्धि मैं हूँ ना। सिर्फ काम करने वाला चाहिए। ओम।